Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

आधुनिक हिंदी कविता
(छायावाद तक)

B.H.D.C.-104

B.A. Hindi (Hons.) - 2nd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	भारतेंदु युगीन कविता : स्वरूप और विकास	1
2.	भारतेंदु और उनकी कविता	12
3.	द्विवेदीयुगीन काव्य : स्वरूप और विकास	23
4.	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और उनकी कविता	35
5.	मैथिलीशरण गुप्त और उनकी कविता	43
6.	रामनरेश त्रिपाठी और उनकी कविता	50
7.	छायावाद : स्वरूप और विकास	59
8.	जयशंकर प्रसाद और उनकी कविता	71
9.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और उनकी कविता	84

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10.	सुमित्रानंदन पन्त और उनकी कविता	93
11.	महादेवी वर्मा और उनकी कविता	104
12.	काव्य वाचन और विश्लेषण : भारतेंदु हरिश्चंद्र और अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	117
13.	काव्य वाचन और विश्लेषण : मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी	125
14.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : जयशंकर प्रसाद	133
15.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	138
16.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : सुमित्रानंदन पंत	145
17.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : महादेवी वर्मा	152

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक) B.H.D.C.-104

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

***नोट :** किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) रहै क्यों एक म्यान असि दोय।
जिन नैनन में हरि रस छायो तेहि क्यों भाखै कोय।
जा तन-मन मैं रति रहे मोहन तहाँ ग्यान का आवै।
चाहो जितनी बात प्रबोधो ह्याँ को जो पति आवै।
अमृत खाइ अब देखि इनारून को मूरख जो भूले।
'हरिचंद' ब्रज ले कटली बन काटौ तो फिरि फूलै।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-118, 'व्याख्या 3'

(ख) मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में,
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बन कर किसी के आँसू मेरे बहा तू,
मैं देखता तुझे था माशूक के बदन में।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-128, 'व्याख्या 1'

(ग) मधुर है स्रोत मधुर है लहरी
न है उत्पाद, छटा है छहरी
मनोहर झरना
कठिन गिरि कहाँ विदारित करना
बात कुछ छिपी हुई है गहरी
मधुर है स्रोत मधुर है लहरी
कल्पनातीत काल की घटना
हृदय को लगी अचानक रटना
देखकर झरना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-135, 'व्याख्या 4'

(घ) वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी-भर दाने को–भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-141, 'व्याख्या 4'

(ङ) अरे, ये पल्लव बाल।
सजा सुमनों के सौरभ हार
गूँथते वे उपहार
अभी तो हैं ये नवल प्रवाल,
नहीं छूटी तरु डाल
विश्व पर विस्मित चितवन डाल,
हिलाते अधर प्रवाल।
न पत्रों का मर्मर संगीत,
न पुष्पों का रस, राग, पराग
एक अस्फुट, अस्पष्ट, अगीत,
सुप्ति की ये स्वनिल मुसकान
सरल शिशुओं के शुचि अनुराग,
वन्य विहगों के गान।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-145, 'व्याख्या 1'

प्रश्न 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य की नवीन प्रवृत्तियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-14, 'नवीन प्रवृत्तियां'

प्रश्न 3. द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-25, 'द्विवेदी युगीन काव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियां'

प्रश्न 4. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

www.neerajbooks.com

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, 'हरिऔध का साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियां'

प्रश्न 5. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना और समाज सुधार के स्वर को उद्‌घाटित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-46, 'राष्ट्रीय भावना और समाज सुधार का स्वर'

प्रश्न 6. छायावाद की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-61, 'छायावाद की अंतर्वस्तु'

प्रश्न 7. 'प्रसाद का शिल्प-विधान' विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-74, 'प्रसाद काव्य : शिल्प विधान'

प्रश्न 8. निराला की प्रमुख कृतियों का परिचय देते हुए उनके काव्य में उपस्थित सांस्कृतिक-सामाजिक नवजागरण के स्वर को चिह्नित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-85, 'समर्थ-सर्जक का कवित्व', पृष्ठ-92, प्रश्न 12

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए।

(क) पंत की नारी दृष्टि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-99, प्रश्न 6

(ख) महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-105, 'प्रणय एवं वेदनानुभूति' पृष्ठ-109, प्रश्न 4

(ग) रामनरेश त्रिपाठी का कृतित्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-54, प्रश्न 2

(घ) राधाचरण गोस्वामी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'श्री राधाचरण गोस्वामी'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आधुनिक हिंदी कविता
(छायावाद तक)

भारतेंदु युगीन कविता : स्वरूप और विकास 1

परिचय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के इतिहास में मील के पत्थर हैं। इनका आगमन एक नये युग के प्रारम्भ को इंगित करता है। इन्होंने हिन्दी के गद्य एवं पद्य की विधाओं में मौलिकता का समावेश करके इनमें नवीन स्फूर्ति का संचार किया जिसके चलते इस काल को विद्वानों ने भारतेन्दु युग कहने में हिचकिचाहट अनुभव नहीं की। इन सबके बावजूद यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि किसी भी युग प्रवृत्ति का अंत या प्रारम्भ एकाएक नहीं होता। इनके परिवर्तन के पीछे बहुत-से सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यक व अन्य कारक कार्य करते हैं, तब जाकर कोई प्रवृत्ति क्षीणतर होती जाती है एवं नवीन प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव होता है। भारतेन्दुकालीन परिवर्तनों के लिए भी ऐसे ही बहुत-से कारक उत्तरदायी थे।

अध्याय का विहंगावलोकन

भारतेन्दु युगीन हिंदी काव्य की पृष्ठभूमि

1800 वि.सं. के उपरांत भारत में अनेक यूरोपीय जातियां व्यापार के लिए आईं। उनके संपर्क से यहां पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ना प्रारंभ हुआ। विदेशियों ने यहां के देशी राजाओं की पारस्परिक फूट से लाभ उठाकर अपने पैर जमाने में सफलता प्राप्त की, जिसके परिणामस्वरूप यहां पर ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई। अंग्रेजों ने यहां अपने शासन कार्य को सुचारु रूप से चलाने एवं अपने धर्म-प्रचार के लिए जन-साधारण की भाषा को अपनाया। इस कार्य के लिए गद्य ही अधिक उपयुक्त होती है। इस कारण आधुनिक युग की मुख्य विशेषता गद्य की प्रधानता रही।

इस काल में होने वाले मुद्रण कला के आविष्कार ने भाषा-विकास में महान योगदान दिया। स्वामी दयानंद ने भी आर्य समाज के ग्रंथों की रचना राष्ट्रभाषा हिंदी में की और अंग्रेज मिशनरियों ने भी अपनी प्रचार पुस्तकें हिंदी गद्य में ही छपवाईं। इस तरह विभिन्न मतों के प्रचार कार्य से भी हिंदी गद्य का समुचित विकास हुआ।

इस काल में राष्ट्रीय भावना का भी विकास हुआ। इसके लिए शृंगारी ब्रजभाषा की अपेक्षा खड़ी बोली उपयुक्त समझी गई। समय की प्रगति के साथ गद्य और पद्य दोनों रूपों में खड़ी बोली का पर्याप्त विकास हुआ। भारतेंदु तथा हरिऔध ने अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा द्वारा हिंदी साहित्य की सम्यक संवर्धना की।

इस काल के आरंभ में राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जगन्नाथ दास रत्नाकर, श्रीधर, पाठक, रामचंद्र शुक्ल आदि ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की। इनके उपरांत भारतेंदु जी ने गद्य का समुचित विकास किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी गद्य को प्रांजल रूप प्रदान कियां इसकी सत्प्रेरणाओं से अन्य लेखकों और कवियों ने भी अनेक भांति की काव्य रचना की। इनमें मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, नाथूराम शर्मा शंकर, भगवान दीन, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, गोपाल शरण सिंह, माखन लाल चतुर्वेदी, अनूप शर्मा, रामकुमार वर्मा, श्याम नारायण पांडेय, दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रभाव से हिंदी-काव्य में भी स्वच्छंद (अतुकांत) छंदों का प्रचलन हुआ।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य में भारतेंदु काल का प्रारंभ प्राय: उन्नीसवीं शती के मध्य से माना जाता है। इस काल में आकर राजनीतिक दृष्टिकोण से देश के वातावरण में एक नए युग का आरंभ हुआ। मुस्लिम राजसत्ता छिन्न-भिन्न होकर समाप्त हो चुकी थी। हिंदू रियासतों जैसी ही दशा मुस्लिम रियासतों की भी बन गई थी। देश की सार्वभौमिक राजनीतिक सत्ता ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में आ गई थी। इससे मुस्लिम और हिंदू राजाओं के सपने टूट चुके थे। बेईमानी, भ्रष्टाचार, दबाव, आतंक आदि इनके घृणित हथकंडे थे। इन उद्देश्यों के साथ अंग्रेजी सम्राज्य अपने पूरे ताने-बाने के साथ भारत की भूमि पर छा गया। इन्होंने भारतीय राजसत्ता को समाप्त करने के साथ-साथ उपाधियों और पेंशनों को भी समाप्त कर दिया। सन 1856 में लार्ड केनिंग की क्रूरता ने भारतीय जनमानस के ज्वालामुखी के विस्फोट को जन्म दिया। सन 1857 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति का बिगुल बजा जिसे अंग्रेजों ने गदर का नाम दिया। सन 1857 ई. की

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

असफल जनक्रांति और राजा, महाराजा और नबावों के विद्रोह और उनके दमन ने अंग्रेजी सत्ता को देश में पूर्ण रूप से सुदृढ़ कर दिया। राजा और नबाव गुलामी का जामा पहनकर अंग्रेजों के दास बन गए। भारतेंदुकालीन साहित्य में व्याप्त देशभक्ति की भावना के साथ-साथ राजभक्ति का स्वर भी मुखरित हुआ है। इसका एकमात्र कारण यह है कि क्रूर औपनिवेशिक दासता के उस 10 युग में राजभक्ति के परदे में ही देशभक्ति को प्रकट कर पाना संभव था।

सामाजिक पृष्ठभूमि

तद्युगीन समाज विषमतापूर्ण समाज था। धार्मिक विभेदों के साथ-साथ जाति-पाँति संबंधी विभेद भी थे। हालाँकि बहुत-से विद्वज्जन जनजागरण की दिशा में कार्य कर रहे थे, लेकिन फिर भी समाज दो भागों में विभक्त था—समाज का एक वर्ग रूढ़िवादी था, तो दूसरा रूढ़िविरोधी। इस पर औपनिवेशिक सत्ता अपने हित साधन हेतु 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा दे रही थी। तद्युगीन नारी की स्थिति बद से बदतर होती जा रही थी। सती प्रथा, पर्दा प्रदा, अशिक्षा की समाज पर गहरी पकड़ थी, जिसके चलते स्त्रियों का मानसिक विकास नहीं हो पा रहा था। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह जैसी कुप्रथाओं ने नारी की स्थिति को और भी अधिक शोचनीय बना दिया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा पर प्रतिबंध हेतु विशेष योगदान दिया। विधवाओं की अमानवीय दशाओं में सुधार हेतु ईश्वरचन्द विद्यासागर आगे आए। उन्होंने स्वयं एक विधवा से विवाह करके समाज के सामने एक मिसाल रखी।

धार्मिक दृष्टि से यह काल अंधविश्वाश का काल था। बहुदेववाद अपने उत्कर्ष पर था। औपनिवेशिक सत्ता इस क्षेत्र में भी पीछे नहीं रही। उन्होंने ईसाई मिशनरियों के माध्यम से भारत में ईसाई धर्म को लोकप्रिय बनाने का कार्य प्रारंभ किया, किन्तु भारतीय नवजागरण के प्रणेताओं ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किये एवं धार्मिक आन्दोलनों के अंतर्गत ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, ब्रह्म विद्या जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई। भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार एवं यूरोपीय प्रगति से भारतीय भी परिचित हुए। वैज्ञानिक प्रगति के ज्ञान ने भारतीय को भी नयी अनुसंधानात्मक दृष्टि प्रदान की।

साहित्यिक पृष्ठभूमि

1857 ई. से पूर्व का काल रीतिकालीन साहित्य का काल था, जिसमें दरबारी साहित्य लिखे जाने की परंपरा थी। साहित्य 'बहुजन हिताय' या 'स्वांत: सुखाय' न होकर राजे-रजवाड़ों की खुशी एवं धन प्राप्ति के लिए लिखा जा रहा था क्योंकि राजे-रजवाड़ों के प्रशंसापरक काव्य लिखने से उन्हें राजदरबार में प्रश्रय मिलने में सुविधा होती थी। 18वीं सदी के अंतिम दशक में भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार हुआ और इसी क्रम में 19वीं सदी में भारत में अनेक बुद्धिजीवियों के प्रयत्नों से अनेक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। जहाँ 1800 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। भारतीय समाज-सुधारक राजा राममोहन राय के प्रयत्नों से 1817 में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई। सन् 1823 में आगरा कॉलेज, 1830 में दिल्ली एवं बरेली कॉलेज, सन् 1833 ई. में कलकत्ता स्कूल ऑफ बुक सोसाइटी एवं 1834 ई. में बंबई में एल्फिन्सटन आदि कॉलेज स्थापित किए गए। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक भारत में अंग्रेजी भाषा का अच्छा प्रचार-प्रसार हुआ। यूँ तो भारत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार औपनिवेशिक सत्ता की औपनिवेशिक नीति का ही एक हिस्सा था, किन्तु इसके भारत के पक्ष में सकारात्मक परिणाम भी हुए। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से भारतीयों के बौद्धिक विकास में वृद्धि तो हुई ही, साथ ही उनके ज्ञान का दायरा भी विस्तृत हुआ जिससे भारत के नवजागरण आन्दोलन में गति आई। नवजागरण को नई गति देने में इस युग के कवियों ने भी अपनी भूमिका का निर्वाह करना प्रारंभ कर दिया था। उन्होंने अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया। जहाँ उन्होंने कबीर, सूर एवं तुलसी को आदर्श रूप में अपनाकर उपदेशात्मक एवं भक्ति से परिपूर्ण काव्य रचना की और बिहारी एवं मतिराम की शृंगारिक रचनाओं को भी काव्य का आधार बनाया, वहीं उन्होंने तद्युगीन स्थिति को भी अपने काव्य की विषय-वस्तु बनाया। सामाजिक यथार्थ एवं देश-प्रेम से संबंधित रचनाएँ लिखने में वे पीछे नहीं हटे। इसी के परिणामस्वरूप कविता में नये-नये भावों एवं विचारों को प्रश्रय मिला।

इतना ही नहीं इस युग में भाषा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अब तक साहित्य की भाषा अवधी या ब्रज मानी जाती थी। लेकिन अब खड़ी बोली में भी काव्य-रचना का श्रीगणेश हुआ और धीरे-धीरे काव्य-भाषा के रूप में खड़ी-बोली को स्थापित करने हेतु काव्य आन्दोलन भी शुरू हुआ।

भारतेन्दु का आगमन

भारतेंदु जी की लोकयात्रा की अवधि एक उल्का की भाँति अल्पकालिक रही, फिर भी इन्होंने अपने जीवन के इस अल्पकाल में ही अपनी प्रतिभा से संपूर्ण विश्व को चमत्कृत कर दिया। बाल्यावस्था से ही देशप्रेम से अभिभूत होकर इन्होंने अपने आप को हिंदी भाषा एवं साहित्य के साथ-साथ भारतवर्ष की वास्तविक उन्नति के लिए समर्पित कर दिया। इनका यह बहु-आयामी व्यक्तित्व इनके जीवन काल में तथा इनके परलोक गमन के बाद भी हिंदी रचनाकारों एवं देशप्रेमियों का मार्ग प्रशस्त करता रहा। यही कारण है कि आज भारतेंदु जी को युग-प्रवर्तक मनीषी के रूप में देखा जाता है। कविवर भारतेंदु हरिश्चंद (1850-85) का जन्म इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचन्द की वंश परंपरा में हुआ था। इनके पिता बाबू गोपालचंद्र गिरिधरदास भी अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे। भारतेंदु ने बाल्यावस्था में ही काव्य रचना आरंभ कर दी थी और अल्पायु में कवित्व-प्रतिभा और सर्वतोमुखी रचना का ऐसा परिचय दिया कि उस समय के पत्रकारों तथा साहित्यकारों ने 1880 ई. में इन्हें भारतेंदु की उपाधि से सम्मानित किया था। कवि होने के साथ ही भारतेंदु पत्रकार भी थे। 'कविवचन

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सुधा' और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' इनके संपादन में संपादित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थी। साहित्य की विविध विधाओं उपन्यास, कहानी, नाटक, 13 निबंध आदि की रचना कर इन्होंने खड़ीबोली की गद्य-शैली के निर्धारण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। भक्ति, श्रृंगार, देशप्रेम, सामाजिक परिवेश और प्रकृति के विविध संदर्भों को लेकर इन्होंने विपुल परिमाण में काव्य रचना की, जो कहीं सरसता और लालित्य में अद्वितीय है, तो अन्यत्र स्थूल वर्णनात्मकता की परिधि को लाँघने में असमर्थ है। इनकी काव्य-कृतियों की संख्या सत्तर है, जिनमें 'प्रेम मल्लिका', 'प्रेम सरोवर', 'गीत गोविंदानंद', 'वर्षा विनोद', 'विनय-प्रेम पचासा', 'प्रेम फुलवारी', 'वेणु-गीति' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी प्रमुख विशेषता यह है कि अपनी अनेक रचनाओं में जहाँ ये प्राचीन काव्य-प्रवृत्तियों के अनुवर्ती रहे, वहीं नवीन काव्यधारा के प्रवर्तन का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। अपनी ओजस्विता, सरलता, भाव-मर्मज्ञता और प्रभविष्णुता में इनका काव्य इतना सजीव है कि उस युग का शायद ही कोई कवि इनसे अप्रभावित रहा हो।

भारतेन्दु युगीन हिंदी काव्य का विकास

भारतेन्दु युग में गद्य को लेकर कोई दुविधा नहीं है न कथ्य को लेकर न माध्यम भाषा को लेकर, क्योंकि भारतेन्दु युग से पूर्व हिन्दी में गद्य की कोई पुष्ट परम्परा नहीं थी। लेकिन कविता को लेकर दुविधा ही दुविधा है। भक्तिकाल और रीतिकाल की सम्पन्न काव्य-परम्परा को छोड़कर एकदम नये कविता मार्ग पर चल पड़ना भारतेन्दु युग के कवियों के लिए सम्भव नहीं था।

इस युग के कवियों ने परम्परा से हटकर नये विषयों को लेकर नयी भाववस्तु वाली कविताएँ प्रभूत मात्रा में लिखी हैं। उन्होंने ऐसे विषयों पर कविताएँ लिखी हैं जिन पर उनके पूर्ववर्ती कवि कविता लिखने की बात सोच भी नहीं सकते थे-जैसे, निर्धनता, भूख. अकाल, महँगाई, रोग, बैर, कलह, आलस्य, सन्तोष, खुशामद, कायरता, टैक्स, अनैक्य, देश की दुर्दशा, धार्मिक मतमतान्तर, छुआछूत, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, व्यभिचार, अशिक्षा, अंग्रेजी भाषा एवं शिक्षा, अज्ञान, रुढ़िप्रियता, समुद्रयात्रा, कूपमण्डूकता, ईश्वर, देवी-देवता, भूत-प्रेत, अपव्यय, न्यायव्यवस्था, पुलिस, प्रशासन, फैशन, सिफारिश, रिश्वतखोरी, बेकारी, सुरा-सेवन इत्यादि।

समकालीन जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिस पर भारतेन्दु युग के कवियों ने कविता न लिखी हो। कविता लेखन के इतने विविध विषय। होना, कविता का, यथार्थ और दैनन्दिन जीवन से जुड़ना है। यह एक तरह से पारलौकिक जीवनदृष्टि को अपदस्थ करके लौकिक जीवन दृष्टि का स्थापित होना है।

पं. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

भारतेंदु मंडल के कवियों में प्रेमघन (1855-1923) का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिला के एक संपन्न ब्राह्मण कुल में हुआ था। भारतेंदु की भाँति इन्होंने भी गद्य और पद्य दोनों शैलियों में विपुल साहित्य रचना की है। साप्ताहिक 'नागरी नीरद' और मासिक 'आनंद कादंबिनी' पत्रिकाओं का संपादन कर इन्होंने तत्कालीन पत्रिका को भी नई दिशा दी। 'जीर्ण जनपद', 'आनंद अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा बिंदु' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं। जो अन्य रचनाओं के साथ 'प्रेमघन सर्वस्व' के प्रथम भाग में संकलित हैं। 'साहित्य लहरी' के वंदना संबंधी दोहों और 'बृजचंद पंचक' में इनकी भक्ति-भावना व्यक्त हुई है। इनकी श्रृंगारिक कविताएँ भी रसिकता संपन्न है। इनके लेखन का मुख्य क्षेत्र जातीयता, समाज-दशा और देश-प्रेम की अभिव्यक्ति है। यद्यपि इन्होंने राजभक्ति संबंधी कविताओं की भी रचना की है तथापि राष्ट्रीय भावना की नई लहर से इनका अविच्छिन्न संबंध था। देश की दुर्व्यवस्था के कारणों और देशोन्नति के उपायों विशद् वर्णन इन्होंने किया है। प्रेमघन ने मुख्यत: ब्रजभाषा में काव्य-रचना की है, किंतु खड़ीबोली को भी इनके काव्य में पर्याप्त स्थान मिला है। ये कविता में भाव-गति के पक्षधर रहे। इन्हें न तो भाषा के शुद्ध प्रयोग की चिंता थी और न ही ये यति भंग से विचलित होते थे। छंद-युक्त रचनाओं के अतिरिक्त इन्होंने लोकसंगीत की कजली और लावनी शैलियों में भी सरस कविताएँ लिखी हैं। प्रेमघन ने मुख्यत: साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं। इन निबंधों की अपनी कुछ निजी विशेषताएँ हैं, जिनके कारण प्रेमघन जाने पहचाने जाते हैं। प्रेमघन की गद्य शैली की सर्वप्रमुख विशेषता कलात्मकता है। इन्होंने अपने गद्य लेखन को कला के रूप में ग्रहण किया। भारतेंदु-मंडल के प्राय: सभी रचनाकारों ने गद्य के साथ नवीन दृष्टि का भी समावेश करते हुए अपनी मौलिकता, जिंदादिली और राष्ट्रप्रेम का परिचय दिया। प्रेमघन के गद्य में ये सभी विशेषताएँ विशेष रूप से आकर्षित करती है। इन्होंने अपने निबंधों में जहाँ विधवा स्त्रियों की दशा का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है, वहीं हिंदू धर्म के आडंबरों, अनाचारों, कुविचारों की भी कटु आलोचना करने से परहेज नहीं किया

प्रतापनारायण मिश्र

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 24 सितंबर सन् 1856 ई. में उत्तर प्रदेश के बैजेगाँव, जिला उन्नाव में हुआ था। 38 साल के अल्प जीवन-काल में इनके द्वारा लिखित विपुल साहित्य में हिंदी नवजागरण की अनेक विशिष्ट प्रवृत्तियाँ छिपी हुई है। नवजागरणकालीन साहित्यिक दृष्टि से मौजूद परंपरा और आधुनिकता, इतिहास और राजनीति तथा धर्म और राष्ट्र के बीच द्वंद्व और संबंध को समझने की दृष्टि से उनके लेखन का अत्यधिक महत्त्व है। कविता, निबंध और नाटक इनके प्रमुख रचना क्षेत्र रहे हैं। कानपुर के रंगमंच और वहाँ की साहित्यिक संस्था 'रसिक समाज' से इनका नजदीकी संबंध था। 'प्रेमपुष्पावली', 'मन की लहर', 'लोकोक्ति शतक', 'तृप्यताम' और 'श्रृंगारविलास' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'प्रताप लहरी' इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। प्रेम और भक्ति की तुलना में सम-सामयिक देश की दशा और राजनीतिक चेतना का वर्णन इन्होंने अधिक मनोयोग से किया है। अपने समय के हास्य-व्यंग्यात्मक कविताओं के क्षेत्र में इनका अग्रणीय स्थान रहा है। प्रेमघन की भाँति इन्होंने भी लावनी-शैली

www.neerajbooks.com

में अनेक कविताएँ लिखी है। ये भावुक कवि थे और अभिव्यंजना पक्ष की अपेक्षा इन्होंने व्यावहारिकता पर अधिक बल दिया। काव्य रचना के लिए इन्होंने खड़ीबोली की अपेक्षा ब्रज भाषा को अपनाया है। हिंदी गद्य और पद्य को नया संस्कार देने में वे अपने जमाने के किसी भी निर्माता से उन्नीस नहीं पड़ते। युग-चेतना के प्रकाशन योग्य नए मुहावरे और नई कलम के वे धनी लेखक हैं। भारतेंदु काल के लेखकों में इनका व्यक्तित्त्व अद्‌भुत है।

श्री राधाचरण गोस्वामी

राधाचरण गोस्वामी का जन्म 25 फरवरी, 1859 को हुआ था। भारत की तत्कालीन राजनीतिक और राष्ट्रीय चेतना की नब्ज पर उनकी उँगली थी और नवजागरण की मुख्य धारा में राधाचरण गोस्वामी जी की सक्रिय एवं प्रमुख भूमिका थी।

गोस्वामी राधाचरण के साहित्यिक जीवन का उल्लेखनीय आरम्भ 1877 में हुआ था। इस वर्ष उनकी पुस्तक 'शिक्षामृत' का प्रकाशन हुआ था। यह उनकी प्रथम पुस्तकाकार रचना है। तत्पश्चात् मौलिक और अनूदित सब मिलाकर 75 पुस्तकों की रचना उन्होंने की। इनके अतिरिक्त उनकी प्राय: तीन सौ से ज्यादा विभिन्न कोटियों की रचनाएँ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में फैली हुई हैं, जिनका संकलन अब तक नहीं किया जा सका है। हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं की श्रीवृद्धि भी उन्होंने की। उन्होंने राधा-कृष्ण की लीलाओं, प्रकृति-सौन्दर्य और ब्रज की संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर काव्य-रचना की। कविता में उनका उपनाम 'मंजु' था।

उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएं इस प्रकार हैं-

1. 'सती चंद्रावती'
2. 'अमर सिंह राठौर'
3. 'सुदामा'
4. 'तन मन धन श्री गोसाई जी को अर्पण'

राधाचरण जी ने समस्या प्रधान मौलिक उपन्यास लिखे। 'बाल विधवा' (1883-84 ई.), 'सर्वनाश' (1883-84 ई.), 'अलकचन्द' (अपूर्ण 1884-85 ई.)'विधवा विपत्ति' (1888 ई.)'जावित्र' (1888 ई.) आदि। वे हिन्दी में प्रथम समस्यामूलक उपन्यासकार थे, प्रेमचन्द नहीं। 'वीरबाला' उनका ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी रचना 1883-84 ई. में उन्होंने की थी। हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास का आरम्भ उन्होंने ही किया।

राधाकृष्ण दास

भारतेंदु हरिश्चंद्र के फुफेरे भाई राधाकृष्णदास (1865-1907) बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये मूल रूप से मथुरा के रहने वाले थे लेकिन इनके जीवन का अधिकांश समय आरा और वाराणसी में व्यतीत हुआ। 16 इनके द्वारा रचित उपन्यास 'निस्सहाय हिंदू' (1885), ऐतिहासिक नाटक 'महारानी पद्मावती' (1883) और 'महाराणा प्रताप सिंह' (1895) में भरतेंदु हरिश्चंद्र का ही प्रत्यक्ष प्रेरणा एवं प्रभाव रहा। कविता के अतिरिक्त इन्होंने नाटक, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय साहित्य की रचना की है। इनकी कविताओं में भक्ति, शृंगार और समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चेतना विशेष रूप से उभरी है। 'भारत बारहमासा' और 'देश-दशा' समसामयिक भारत के संदर्भ में इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। राधाकृष्णदास की कुछ कविताएँ 'राधाकृष्ण ग्रंथावली' में संकलित हैं। इनकी अनेक रचनाएँ अभी भी अप्रकाशित हैं। ब्रजभाषा की कविताओं में मधुरता और खड़ीबोली की रचनाओं में प्रासादिकता की ओर इनकी सहज प्रवृत्ति रही है।

भारतेन्दु युगीन हिंदी काव्य की विशेषताएँ

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है। भारतेन्दु का व्यक्तित्व प्रभावशाली था, वे सम्पादक और संगठनकर्ता थे, वे साहित्यकारों के नेता और समाज को दिशा देने वाले सुधारवादी विचारक थे, उनके आसपास तरुण और उत्साही साहित्यकारों की पूरी जमात तैयार हुई, अत: इस युग को भारतेन्दु-युग की संज्ञा देना उचित है।

इस काल में हिन्दी के प्रचार में जिन पत्र-पत्रिकाओं ने विशेष योग दिया, उनमें 'उदन्त मार्तण्ड', 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' अग्रणी हैं। इस समय हिन्दी गद्य की सर्वांगीण प्रगति हुई और उसमें उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना, जीवनी आदि विधाओं में अनूदित तथा मौलिक रचनाएं लिखी गयीं।

विषयवस्तु

भारतेन्दु काल की कविता अन्तर्विरोधी मूल्यों की कविता है और यह अन्तर्विरोध समाज की संरचना के भीतर से आया है। उस समय अंग्रेजी संस्कृति और भारतीय संस्कृति के दो विरोधी मूल्यों का मिलन हो रहा था, जिससे तनाव की स्थिति पैदा हुई। यह तनाव कविता में भी कई स्तरों पर व्यक्त होता है, जैसे–राजभक्ति बनाम राजविरोध, राजभक्ति बनाम राष्ट्रभक्ति, भक्ति- शृंगार बनाम जन सामान्य की समस्याएँ, ब्रज भाषा बनाम खड़ी बोली इत्यादि।

भारतेन्दु युग के प्रारंभ के कवियों में ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्ति के भाव थे। इसका कारण यह था कि प्रारंभ में वे साम्राज्यवादी सरकार स्वार्थ को स्पष्ट रूप से समझ नहीं सके। यद्यपि ब्रिटिश सरकार के स्वार्थ को स्पष्ट रूप से समझ नहीं सके। यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने कुछ सुधार अवश्य किये, परंतु ऐसा करने के पीछे उनकी सदिच्छा नहीं थी। इस आरम्भिक दौर में ब्रिटिश सरकार का सही रूप स्पष्ट न हो सका। इसलिए इस युग में जहाँ महारानी विक्टोरिया की प्रशंसा के भाव मिलते हैं, वहीं राष्ट्र प्रेम भी मिलता है–

''अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।''

समस्याओं पर आधुनिक चिंतन करने वाले कवियों के पास तत्कालीन तनावपूर्ण स्थितियों से उबरने का कोई साधन नहीं है। इसलिए वे भारत की दुर्दशा पर आँसू बहाने को विवश हैं–

Neeraj Publications www.neerajbooks.com